शिक्षा संवाद
2023, 10 (2): 77-93
ISSN: 2348-5558
©2023, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

उत्तर प्रदेश में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की अवसंरचना, सुविधाएँ और चुनौतियों का अन्वेषणात्मक अध्ययन

किरण ऋचा
आरआईई, अजमेर,एनसीईआरटी
ईमेल: richakiran96@gmail.com

सार

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के ललितपुर, झांसी, और हमीरपुर जिलों के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) स्कूलों में बुनियादी ढांचे, सुविधाओं और संचालनात्मक चुनौतियों की स्थिति का अध्ययन करता है। पर्यवेक्षणों और फोकस ग्रुप डिस्कशन (एफ़जीडीs) का उपयोग करते हुए, यह शोध महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर करता है जैसे अपर्याप्त सीमा दीवारें, खराब नालियां, अपर्याप्त रोशनी, प्रयोगशालाओं की कमी और आपदा प्रबंधन मॉक ड्रिल और करियर काउंसलिंग में कमियां। निष्कर्षों में स्वच्छता, कर्मचारियों के वेतन से असंतोष, और शैक्षिक गुणवत्ता में अंतराल भी सामने आते हैं। इन समस्याओं को दूर करने और केजीबीवी के समग्र कार्यप्रणाली में सुधार करने के लिए सुझाव दिए गए हैं।

***कूट शब्द:* कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, बुनियादी ढांचा, स्वच्छता, शिक्षा,हाशिये पर स्थित लड़कियां।**

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) कार्यक्रम, जिसे 2004 में सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) के तहत भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया था, एक परिवर्तनकारी पहल है। इसका उद्देश्य हाशिये पर स्थित समुदायों की लड़कियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना है, विशेष रूप से ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में। इन समुदायों में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), और अल्पसंख्यक समूह शामिल हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य साक्षरता में लिंग और सामाजिक अंतर को पाटना है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ ग्रामीण महिलाओं की साक्षरता

दर राष्ट्रीय औसत से कम है और शिक्षा में लिंग असमानताएँ काफी अधिक हैं (शिक्षा मंत्रालय, 2004)।

केजीबीवी कार्यक्रम उच्च प्राथमिक स्तर पर आवासीय स्कूलिंग सुविधाएं प्रदान करता है, जो विशेष रूप से उन लड़कियों के लिए हैं जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया है या कभी स्कूल नहीं गई। यह नि:शुल्क शिक्षा, आवास और आवश्यक सुविधाएं प्रदान करके इन लड़कियों को शिक्षा प्रणाली में पुनः प्रवेश करने, शैक्षिक रूप से पीछे न पड़ने और महत्वपूर्ण जीवन कौशल प्राप्त करने का अवसर देता है। स्कूलों में उन सिस्टमात्मक बाधाओं को दूर करने पर भी ध्यान केंद्रित किया जाता है, जैसे गरीबी, लिंग भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार, जो अक्सर लड़कियों को गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने से रोकते हैं (भारती, 2018)। केजीबीवीs में 75% सीटें एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समुदायों की लड़कियों के लिए आरक्षित हैं, जबकि शेष 25% सीटें गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले घरों की लड़कियों के लिए प्राथमिकता दी जाती हैं। ये प्रावधान कार्यक्रम की समानता और पहुंच के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, जो सबसे वंचित वर्गों के लिए शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करते हैं (शिक्षा मंत्रालय, 2004)।

अपने प्रारंभ से ही केजीबीवी कार्यक्रम ने लड़कियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई महत्वपूर्ण सुधार किए हैं। 2007 में, बारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत, इस कार्यक्रम को सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) के साथ एकीकृत किया गया, जिससे इसका दायरा बढ़ा और इसके प्रभाव को मजबूत किया गया। 2018-19 में और सुधार किए गए, जब केजीबीवी को वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक उन्नत करने की व्यवस्था की गई, ताकि 150–250 लड़कियों को गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल (जीएसएस) कार्यक्रम के अनुरूप समायोजित किया जा सके। केजीबीवी को समग्र शिक्षा अभियान के तहत एकीकृत करना इस बात को रेखांकित

करता है कि ये स्कूल शिक्षा में समानता और लिंग असमानताओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (शर्मा और सिंह, 2020)।

इसके बावजूद, केजीबीवी कार्यक्रम कई चुनौतियों का सामना करता है जो इसके पूर्ण संभावनाओं को प्रभावित करती हैं। उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में किए गए अनुसंधान ने कई समस्याओं को उजागर किया है, जहां केजीबीवी स्कूलों की संख्या अधिक है। इन समस्याओं में अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, अपर्याप्त स्टाफ और शैक्षिक गुणवत्ता और वितरण में अंतर शामिल हैं। ललितपुर, झांसी और हमीरपुर जैसे जिले इन समस्याओं के उदाहरण हैं, जहां स्थल निरीक्षण और प्रमुख हितधारकों के साथ फोकस ग्रुप डिस्कशन (एफ़जीडी) के माध्यम से महत्वपूर्ण खामियाँ सामने आई हैं। समस्याएँ जैसे कि रखरखाव की कमी, शिक्षण संसाधनों का अभाव, और समग्र विकास पर ध्यान न देने की आवश्यकता, नीति सुधार और लक्षित निवेश की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती हैं (भारती, 2018)।

शिक्षा को हमेशा सामाजिक और आर्थिक प्रगति की कुंजी माना गया है। यह व्यक्तियों को साक्षरता, गणना, संवाद और समस्या-समाधान जैसे महत्वपूर्ण कौशल प्रदान करती है, जो व्यक्तिगत और राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक हैं। प्रौद्योगिकी में विकास और उत्पादन विधियों में बदलाव के संदर्भ में, शिक्षा एक अनुकूलनशील और कुशल मानव संसाधन तैयार करने में बढ़ोतरी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक राष्ट्र के लिए सतत विकास प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि वह पुरुषों और महिलाओं के लिए समावेशी और समान शिक्षा सुनिश्चित करे। केजीबीवी कार्यक्रम इस सिद्धांत को साकार करता है, क्योंकि यह हाशिये पर स्थित लड़कियों को गरीबी और सामाजिक वंचना के चक्र को तोड़ने का अवसर प्रदान करता है (शिक्षा मंत्रालय, 2004)।

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के ललितपुर, झांसी और हमीरपुर जिलों में केजीबीवी

स्कूलों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है, जिसमें स्थल निरीक्षण और प्रमुख हितधारकों के साथ फोकस ग्रुप डिस्कशन जैसी गुणात्मक अनुसंधान विधियों का उपयोग किया गया है। इन स्कूलों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं और अंतरालों की पहचान करके, यह अनुसंधान केजीबीवी कार्यक्रम की प्रभावशीलता में सुधार लाने के लिए व्यापक विचार-विमर्श में योगदान करने का उद्देश्य रखता है, विशेष रूप से समान सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक संदर्भों में। निष्कर्ष नीति-स्तरीय हस्तक्षेपों, बेहतर बुनियादी ढांचे और क्षमता निर्माण पहलों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, ताकि छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके। अंततः, यह अध्ययन कार्यक्रम के प्रभाव को बढ़ाने और एक समान और प्रगतिशील समाज बनाने में सहायक तर्कशील सुझाव प्रदान करने का लक्ष्य रखता है (कुमार एट अल., 2019)।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

गगोई, एस., और गोस्वामी, यू. (2015) द्वारा किया गया अध्ययन, जिसका शीर्षक है "केजीबीवी की शैक्षिक सशक्तिकरण में भूमिका का मूल्यांकन: एक संक्षिप्त विश्लेषण", कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) के महत्व को उजागर करता है, जो असम में वंचित लड़कियों के बीच शैक्षिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस अध्ययन में आवासीय स्कूलिंग और लचीली शिक्षाशास्त्र के माध्यम से अवसरों पर जोर दिया गया है, लेकिन इसमें विधिवत रूप से साक्ष्य और सांख्यिकी विश्लेषण की कमी है। अगर इस अध्ययन को संदर्भित डेटा और कार्यकारी सिफारिशों के साथ मजबूत किया जाता, तो इसके निष्कर्षों को नीति सुधार उद्देश्यों के साथ बेहतर तरीके से जोड़ा जा सकता था।

मिल्लर और लिटसिंग (2015) ने ग्रामीण भारत में लड़कियों की शिक्षा पर एनपीईजीईएल/केजीबीवी कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन किया। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि इस कार्यक्रम के परिणामस्वरूप लड़कियों की ऊपरी प्राथमिक विद्यालयों में

नामांकन में 6-7 प्रतिशत अंक की महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। इस कार्यक्रम ने लिंग-संवेदनशील बुनियादी ढांचे और संसाधनों में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया और लड़कों के नामांकन पर भी सकारात्मक प्रभाव के प्रारंभिक साक्ष्य दिखाए। यह अनुसंधान शिक्षा में लड़कियों की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता को उजागर करता है। अग्रवाल (2016) ने छत्तीसगढ़ के आदिवासी और गैर-आदिवासी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) में लड़कियों के जीवन कौशल का अध्ययन किया और उन्हें अन्य स्कूलों की लड़कियों से तुलना की। इस अध्ययन में 720 लड़कियों को शामिल किया गया, और पाया गया कि आदिवासी केजीबीवी छात्राओं में गैर-आदिवासी छात्राओं और अन्य स्कूलों की लड़कियों की तुलना में जीवन कौशल में श्रेष्ठता थी। परिणाम बताते हैं कि समर्थनकारी शैक्षिक वातावरण और आदिवासी लड़कियों द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट चुनौतियाँ इन जीवन कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं। यह अध्ययन संदर्भ-विशिष्ट शैक्षिक हस्तक्षेपों के महत्व को और केजीबीवीs जैसे आवासीय स्कूलों की भूमिका को उजागर करता है जो वंचित लड़कियों में जीवन कौशल और लचीलापन को बढ़ावा देते हैं।

सिंह (2017) ने बिहार में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) में कक्षा VI के छात्रों के हिंदी भाषा प्रदर्शन के कारणों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि लगभग 40% छात्राओं को हिंदी में समस्या थी, जिसका मुख्य कारण शिक्षकों की कमी (46%) और विशेष रूप से भाषा शिक्षकों के लिए अपर्याप्त प्रशिक्षण था। आवासीय सुविधाओं के बावजूद, उच्च प्राथमिक स्तर पर संक्रमण दर में 6-24% की कमी पाई गई। इस अध्ययन में प्रभावी शिक्षण प्रथाओं की कमी, अपर्याप्त शिक्षाशास्त्रीय प्रशिक्षण और भाषा शिक्षण के लिए संरचित गतिविधियों का अभाव प्रमुख समस्याएँ थीं। इसने शिक्षकों की तैनाती, प्रशिक्षण, और संसाधनों के प्रबंधन में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया।

अग्रवाल (2017) ने छत्तीसगढ़ के आदिवासी और गैर-आदिवासी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) और अन्य स्कूलों में 720 लड़कियों की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण Classroom Environment Scale के चार आयामों: प्रणाली रखरखाव, व्यक्तिगत विकास, संबंध और प्रणाली परिवर्तन के माध्यम से किया। आदिवासी केजीबीवीs में प्रणाली रखरखाव और व्यक्तिगत विकास में श्रेष्ठ प्रदर्शन देखा गया, जबकि गैर-आदिवासी केजीबीवीs ने संबंध और प्रणाली परिवर्तन आयामों में उत्कृष्टता दिखाई। तुलनाओं से यह स्पष्ट हुआ कि आदिवासी केजीबीवीs को संबंध और प्रणाली परिवर्तन आयामों में सुधार की आवश्यकता है, जबकि गैर-आदिवासी केजीबीवीs को व्यक्तिगत विकास और प्रणाली रखरखाव पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। ये निष्कर्ष विभिन्न स्कूल सेटिंग्स में ताकत और विकास के क्षेत्रों के बारे में सूक्ष्म दृष्टिकोण को उजागर करते हैं।

पार्थसारथी(2018) ने "जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का केजीबीवी में जागरूकता स्तर पर प्रभाव" नामक अध्ययन में, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवीs) के 13-15 वर्ष आयु वर्ग (कक्षा VIII, IX और X) की किशोरी लड़कियों के बीच जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन किया। 60 छात्रों के नमूने का मूल्यांकन 65-आइटम जीवन कौशल सूची से किया गया, जिसमें जीवन कौशल शिक्षा (एलएसई) के नौ डोमेन शामिल थे। परिणामों ने यह दर्शाया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद सभी नौ डोमेन में जागरूकता में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। यह अध्ययन केजीबीवी छात्रों के बीच मानसिक-सामाजिक क्षमताओं और अंतरवैयक्तिक कौशल को बढ़ाने में जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को उजागर करता है।

कुमार और विजय वर्धीनी (2019) ने "केजीबीवी छात्रों के परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध" नामक अध्ययन में, आंध्र प्रदेश के कुप्पम और गुडिपल्ले मंडलों से 100 आठवीं और नौवीं कक्षा के छात्रों के बीच परीक्षा चिंता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध

की जांच की। अध्ययन में पाया गया कि परीक्षा चिंता छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण रूप से बाधित कर रही थी, जो शारीरिक अधिक उत्तेजना, तनाव, शारीरिक लक्षण और संज्ञानात्मक चुनौतियों जैसे खराब ध्यान और विफलता का डर के रूप में व्यक्त होती थी। ये कारक धारणा, विचार प्रवाह, और समग्र परीक्षा प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते थे। निष्कर्षों ने परीक्षा चिंता को प्रबंधित करने और केजीबीवी छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन को समर्थन देने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों पर मौजूद साहित्य उनके महत्व को उजागर करता है, विशेष रूप से भारत में वंचित लड़कियों के बीच शैक्षिक सशक्तिकरण और जीवन कौशल विकास में। गगोई व गोस्वामी (2015) और मिल्लर व लिटसिंग (2015) द्वारा किए गए अध्ययन केजीबीवीs के संभावित प्रभाव को उजागर करते हैं, लेकिन इनमें विधिवत साक्ष्य और सांख्यिकीय विश्लेषण की कमी है। अग्रवाल (2016) और अग्रवाल (2017) द्वारा किए गए अनुसंधान से पता चलता है कि विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में केजीबीवीs जीवन कौशल और प्रणाली रखरखाव में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं, लेकिन छात्र-शिक्षक संबंध और प्रणाली परिवर्तन में सुधार की आवश्यकता को भी उजागर करते हैं। सिंह (2017) और कुमार और विजय वर्धीनी (2019) परीक्षा चिंता, शिक्षक की कमी, अपर्याप्त प्रशिक्षण और शैक्षिक प्रदर्शन पर इन कारकों के प्रभाव को उजागर करते हैं। प्रशान्ति (2018) जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करती हैं। हालांकि, इन निष्कर्षों के बावजूद, केजीबीवी की प्रभावशीलता पर एक समग्र अध्ययन की कमी है, जो बुनियादी ढांचे, स्टाफिंग और मानसिक-सामाजिक कारकों को एकीकृत करता हो, विशेष रूप से विभिन्न भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भों में।

शोध उद्देश्य

- ललितपुर, झांसी, और हमीरपुर जिलों में केजीबीवी विद्यालयों की अवसंरचना की स्थिति का मूल्यांकन करना।
- इन विद्यालयों में शैक्षिक और मनोरंजन सुविधाओं की उपलब्धता का मूल्यांकन करना।
- अवसंरचना, सुविधाओं, और उनके शैक्षिक गुणवत्ता पर प्रभाव से संबंधित चुनौतियों का अन्वेषण करना।

शोध विधि

यह अनुसंधान गुणात्मक विधियों का उपयोग करता है, जिसमें सीधे अवलोकन और फोकस ग्रुप डिस्कशन शामिल हैं, ताकि ललितपुर, झांसी, और हमीरपुर के तीन केजीबीवी विद्यालयों से डेटा एकत्र किया जा सके। शारीरिक अवसंरचना, सुविधाओं, और समग्र पर्यावरण का मूल्यांकन करने के लिए अवलोकन किए गए, जबकि स्टाफ, एसएमसी सदस्य, और सहायक स्टाफ के साथ एफ़जीडी ने उनके अनुभवों और चुनौतियों के बारे में जानकारी प्रदान की। डेटा को श्रेणीबद्ध करने और विश्लेषण करने के लिए थीमेटिक विश्लेषण का उपयोग किया गया।

प्रतिदर्श

इस अध्ययन को पूर्ण करने के लिए प्रतिदर्श के रूप में तीनों केजीबीपी के स्कूलों के सभी टीचिंग तथा नॉन टीचिंग कर्मचारियों को सम्मिलित किया गया है था उसे जुड़े सभी गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया है।

परिसीमन

यह अध्ययन यूपी राज्य के तीन जिलों तक सीमित है तथा उसमें आने वाले केजीबीपी स्कूल जैसे केजीवीपी ललितपुर , हमीरपुर एवं झांसी आदि को सम्मिलित किया गया है।

आंकड़ा संग्रहण

शोधार्थी द्वारा आंकड़ा संग्रहण के लिए एमटीएस तथा एसएमसी का फोकस ग्रुप डिस्कशन तथा विद्यालय का ऑब्जरवेशन करने के लिए ऑब्जरवेशन शेड्यूल का इस्तेमाल किया गया है।

विश्लेषण और व्याख्या : फोकस ग्रुप डिस्कशन

ललितपुर में एसएमसी सदस्यों के साथ एफ़जीडी : लालितपुर में एसएमसी सदस्यों के साथ एफ़जीडी से यह सामने आया कि बैठक में केवल चार सदस्य उपस्थित थे। सदस्य अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक नहीं थे, जिससे उनकी भागीदारी सीमित हो गई। उन्हें अपने कार्य प्रोफ़ाइल की जानकारी नहीं थी और वे वित्तीय निर्णयों में शामिल नहीं थे। चर्चा में यह बात सामने आई कि अभिभावक कक्षा उन्नयन और अपर्याप्त स्टाफिंग को लेकर चिंतित थे, और कोई अलग वार्डन नहीं था, जिसके कारण पूर्णकालिक शिक्षकों को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ रही थी। सदस्य योजनाओं जैसे 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' से परिचित थे, लेकिन उन्हें NTSE, कला उत्सव, और योग ओलंपियाड के बारे में जानकारी नहीं थी। उन्हें स्कूल उत्सवों में आमंत्रित नहीं किया गया और वे योजना और विकास में शामिल नहीं थे। हालांकि, उन्होंने स्कूल से बाहर होने वाली लड़कियों को वापस स्कूल लाने में भूमिका निभाई। चिकित्सा सुविधाओं की कमी एक बड़ा मुद्दा था।

हमीरपुर में एसएमसी **सदस्यों के साथ** एफ़जीडी : हमीरपुर में, बैठक में 10 एसएमसी सदस्य शामिल हुए। उनके केजीबीवी प्रमुख के साथ अच्छे संबंध थे, लेकिन वे वित्तीय मामलों में शामिल नहीं थे। मासिक बैठकें आयोजित होती थीं, लेकिन उपस्थिति असंगत थी। सदस्य केजीबीवी के बारे में विज्ञापनों के माध्यम से जानते थे, लेकिन अपने कर्तव्यों के बारे में जागरूक नहीं थे। प्रमुख चुनौतियाँ गणित, उर्दू, अंग्रेजी, और समाजशास्त्र जैसे विषयों में शिक्षक की कमी और एसएमसी सदस्यों के लिए कोई ओरिएंटेशन या प्रशिक्षण की कमी थी। सुझावों में स्कूल को कक्षा 12 तक अपग्रेड करना, स्टाफ की खाली पदों को भरना, चिकित्सा स्टाफ की नियुक्ति करना, और स्थानीय कौशल जैसे पेंटिंग और मेहंदी को बढ़ावा देना शामिल थे।

झांसी में सहायक स्टाफ के साथ एफ़जीडी: इस एफ़जीडी में पांच स्टाफ सदस्य शामिल थे: एक सुरक्षा गार्ड, कुक, चपरासी, अकाउंटेंट, और क्लीनर। वे सभी परिसर से बाहर से आते थे, सिवाय कुक के, जो साइट पर रहते थे। समस्याएँ थीं: अपर्याप्त सफाई सामग्री, खराब कार्यशील वाशिंग मशीन, और गर्म पानी की कमी। वेतन में देरी, स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपस्थिति, और उचित प्रशिक्षण की कमी आम चिंताएँ थीं। स्टाफ को विशेष समस्याएँ भी थीं: सुरक्षा गार्ड को गार्ड रूम की आवश्यकता थी, कुक को बीमारी के दौरान वैकल्पिक कुक की जरूरत थी, और क्लीनरों को बेहतर सफाई उत्पादों की आवश्यकता थी।

हमीरपुर में सहायक स्टाफ के साथ एफ़जीडी: इसमें पांच सहायक स्टाफ सदस्य शामिल थे। क्लीनर्स ने दैनिक सफाई की, लेकिन उन्हें सफाई सामग्री की कमी और गर्म पानी की अनुपस्थिति जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। कुक ने रसोई में संकुचित भंडारण क्षेत्र और RO सुविधाओं की कमी का उल्लेख किया। सुझावों में वेतन वृद्धि, गार्ड रूम की व्यवस्था, और स्वास्थ्य और स्वच्छता चिंताओं को संबोधित करना शामिल था। कुक ने निश्चित कार्य घंटों और बीमारी के दौरान वैकल्पिक कुक की मांग की।

अवसंरचना और सुविधाएँ

सीमा दीवारें और सुरक्षा

- सीमा दीवारें निम्न थीं और इनमें बाड़ की कमी थी, जिससे सुरक्षा पर खतरा था।
- लालितपुर और हमीरपुर में बाहरी खतरे की चिंता थी।

निकासी प्रणालियाँ

- लालितपुर और हमीरपुर में खराब निकासी प्रणालियाँ देखी गईं।
- खुले गड्ढों में पानी जमा होता था, जो स्वास्थ्य के लिए खतरा था।

स्वच्छता और सैनिटेशन

- स्नानघर में बुनियादी सुविधाओं की कमी थी और इनकी मरम्मत की आवश्यकता थी।
- मच्छरों का प्रकोप और गंदे हालात ने बेहतर रखरखाव की आवश्यकता को उजागर किया।

रोशनी और सुविधाएँ

- कक्षा कक्षों, छात्रावासों और रसोई में अपर्याप्त रोशनी एक सामान्य समस्या थी।
- विषय-विशेष प्रयोगशालाओं की अनुपस्थिति ने शैक्षिक गुणवत्ता को बाधित किया।

व्याख्या : ललितपुर, झांसी, और हमीरपुर में केजीबीवी विद्यालयों में किए गए क्षेत्रीय अवलोकनों के आधार पर, यह स्पष्ट है कि इन विद्यालयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके संचालन की दक्षता और छात्रों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करती हैं। सबसे प्रमुख समस्या जो देखी गई, वह थी अवसंरचना की खराब स्थिति। लालितपुर और हमीरपुर में, सीमा दीवारें निम्न थीं और उचित बाड़ की कमी थी, जिससे सुरक्षा के महत्वपूर्ण सवाल उठे। इन खामियों के कारण विद्यालय बाहरी खतरों के प्रति संवेदनशील हो गए थे, जो छात्रों की सुरक्षा को प्रभावित करते थे। इसके अलावा, इन क्षेत्रों में निकासी प्रणालियाँ खराब रख-रखाव की स्थिति में थीं, खुले गड्ढों में

पानी जमा हो रहा था, जिससे स्वच्छता समस्याएँ और संभावित स्वास्थ्य खतरे उत्पन्न हो रहे थे। स्वच्छता और सैनिटेशन एक और प्रमुख चिंता बनकर सामने आई। स्नानघर जर्जर स्थिति में पाए गए, जिनमें बुनियादी सुविधाओं की कमी थी और इन्हें तत्काल मरम्मत की आवश्यकता थी। उचित वेंटिलेशन की कमी और मच्छरों के प्रकोप ने स्वच्छता की समस्या को और बढ़ा दिया, जिससे छात्रों के लिए एक स्वस्थ जीवनशैली बनाए रखना कठिन हो गया। कक्षाओं, छात्रावासों और रसोई में रोशनी की कमी भी एक सामान्य समस्या थी, जो न केवल अध्ययन के माहौल को प्रभावित करती थी, बल्कि छात्रों की समग्र सुरक्षा को भी खतरे में डालती थी। विषय-विशेष प्रयोगशालाओं की कमी, विशेषकर मुख्य विषयों के लिए, भी शैक्षिक गुणवत्ता में बाधा डालने वाला एक महत्वपूर्ण कारण था।

सभी तीन जिलों में स्टाफ की कमी एक सामान्य समस्या थी, जिसमें गणित, उर्दू, अंग्रेजी, और समाजशास्त्र जैसे प्रमुख विषयों में पद रिक्त थे। शिक्षकों पर अक्सर दोहरी जिम्मेदारी डाली जाती थी, जिससे न केवल उनकी शैक्षिक प्रभावशीलता पर प्रभाव पड़ता था, बल्कि कर्मचारियों का मानसिक तनाव भी बढ़ता था। इसके अतिरिक्त, एसएमसी सदस्यों के अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सीमित जागरूकता थी, जिससे वे स्कूल के विकास में अपना योगदान नहीं दे पा रहे थे। एसएमसी सदस्यों के लिए कोई ओरिएंटेशन या प्रशिक्षण की कमी ने इस समस्या को और बढ़ा दिया।

सहायक स्टाफ, जिसमें क्लीनर, कुक, और सुरक्षा कर्मी शामिल थे, को भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनमें वेतन में देरी, उचित प्रशिक्षण की कमी, और स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपस्थिति शामिल थीं। इन चुनौतियों के बावजूद, स्कूलों ने छूटे हुए लड़कियों को फिर से स्कूल में दाखिला दिलाने और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाओं को बढ़ावा देने के प्रयास किए। हालांकि, समग्र स्थिति तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता को दर्शाती है, क्योंकि अवसंरचनात्मक, स्टाफिंग और संगठनात्मक कमियों के

कारण स्कूलों की यह क्षमता सीमित हो गई है कि वे अपने उद्देश्य को पूरा कर सकें, जो कि हाशिए पर रहने वाली लड़कियों को सशक्त बनाना है।

सिफारिशें

अवसंरचना और सुरक्षा

- सीमा दीवारों की ऊँचाई बढ़ाई जाए और सुरक्षा के लिए बाड़ लगाई जाए।
- स्वास्थ्य खतरों को रोकने के लिए निकासी प्रणालियों को सुधारा जाए।
- स्नानघरों का पुनर्निर्माण किया जाए और कार्यशील सफाई उपकरण प्रदान किए जाएं।

शैक्षिक और समर्थन सुविधाएँ

- कंप्यूटर और विज्ञान प्रयोगशालाएँ स्थापित की जाएं।
- छात्रों के लिए आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण और आत्मरक्षा कक्षाएँ शुरू की जाएं।

स्वास्थ्य और पोषण

- स्वास्थ्य रिकॉर्ड बनाए रखने और आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के लिए चिकित्सा स्टाफ नियुक्त किया जाए।
- रसोई में उचित भंडारण और आरओ सुविधाएँ सुनिश्चित की जाएं।

कर्मचारी कल्याण

- कार्यभार के अनुरूप वेतन संरचना को सुधारा जाए।
- कर्मचारियों और एसएमसी सदस्यों के लिए नियमित प्रशिक्षण और ओरिएंटेशन प्रदान किया जाए।

निष्कर्ष

यह अध्ययन ललितपुर, हमीरपुर और झांसी जिलों के केजीबीवी विद्यालयों में गंभीर चुनौतियाँ उजागर करता है। इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि इन विद्यालयों को अवसंरचनात्मक, सुविधाओं से संबंधित और संचालन संबंधी गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ये विद्यालय, जो हाशिए पर रहने वाली लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं, निम्न सीमा दीवारें, खराब निकासी प्रणालियाँ, और अपर्याप्त रोशनी जैसी अवसंरचनात्मक समस्याओं से जूझ रहे हैं, जो न केवल छात्रों की सुरक्षा को प्रभावित करते हैं बल्कि शैक्षिक गुणवत्ता को भी कमजोर करते हैं। स्वच्छता और सैनिटेशन की स्थिति भी खराब है, जिसमें जर्जर स्नानघर और अपर्याप्त सफाई सामग्री जैसी समस्याएँ हैं, जो एक अस्वस्थ वातावरण पैदा करती हैं। इसके अलावा, विशेष शैक्षिक सुविधाओं की कमी, जैसे विषय-विशेष प्रयोगशालाएँ, छात्रों के शैक्षिक अनुभव को और बाधित करती हैं। संचालन संबंधी समस्याएँ स्टाफ की कमी, चिकित्सा स्टाफ की अनुपस्थिति, और मौजूदा कर्मचारियों पर दोहरी जिम्मेदारी डालने से बढ़ जाती हैं। एसएमसी सदस्यों के अपने कर्तव्यों के प्रति सीमित जागरूकता भी स्कूल के सुधार प्रयासों में कमी लाती है। इन चुनौतियों के बावजूद, कुछ सकारात्मक प्रयास किए गए हैं, जैसे कि छूटे हुए लड़कियों को फिर से स्कूल में दाखिला दिलाना और सरकारी योजनाओं को लागू करना जैसे 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'। केजीबीवी विद्यालयों के संचालन को बेहतर बनाने के लिए अवसंरचना में लक्षित निवेश, कर्मचारियों के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरुआत, और बेहतर कल्याण उपायों को लागू करने की तत्काल आवश्यकता है। इन समस्याओं का समाधान इन विद्यालयों को अपने उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम बनाएगा, जो है हाशिए पर रहने वाली लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और उन्हें गरीबी और सामाजिक बहिष्कार के चक्र को तोड़ने में सशक्त बनाना।

*****

संदर्भ

- गोगोई, एस., और गोस्वामी, यू. (2015)। असम में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) की शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभावशीलता। *एशियन जर्नल ऑफ़ होम साइंस, 10*(1), 161-167।
- https://doi.org/10.15740/has/ajhs/10.1/161-167
- मेलर, एम., और लिट्सचिग, एस. (2015)। लड़कियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा की आपूर्ति को अनुकूलित करना: ग्रामीण भारत में एक नीति प्रयोग से साक्ष्य। *द जर्नल ऑफ़ ह्यूमन रिसोर्स, 51*(3), 760-802। https://doi.org/10.3368/jhr.51.3.0612-5000R
- शाह, पी. (2011)। लड़कियों की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए विमर्शात्मक स्थान: ग्रामीण भारत के दृष्टिकोण। *रिसर्च इन कंपेरेटिव एंड इंटरनेशनल एजुकेशन, 6*(1), 106-90।
- https://doi.org/10.2304/rcie.2011.6.1.90
- कविथाकिरण, वी. (2015)। केजीबीवीs होम साइंस में पढ़ने वाली लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन।
- सिंह, सी. (2017)। बिहार में केजीबीवी छात्रों की हिंदी भाषा क्षमता। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव रिसर्च, 5* (2), 127-141। https://doi.org/10.15415/iie.2017.52008
- अग्रवाल, यू. (2017)। छत्तीसगढ़ में आदिवासी और गैर-आदिवासी केजीबीवी की लड़कियों की शैक्षिक स्थिति का अन्य स्कूलों की लड़कियों से तुलना। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी, 7*(1), 49-59.
- वरलक्ष्मी, जी. (2023)। आंध्र प्रदेश में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का प्रबंधन: स्टेकहोल्डर्स की धारणाएँ। *इंडियन जर्नल ऑफ़ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 69*(4), 861-876।
- https://doi.org/10.1177/00195561231196234
- प्रशांति, बी., और टी. (2018)। केजीबीवीs में लाइफ स्किल्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड सोशल रिसर्च, 8*(6), 39-44। https://doi.org/10.24247/ijesrdec20186
- अग्रवाल, यू. (2016)। छत्तीसगढ़ में आदिवासी और गैर-आदिवासी केजीबीवी की लड़कियों के जीवन कौशल का अन्य स्कूलों की लड़कियों से तुलना। *इंडियन जर्नल ऑफ़ हेल्थ एंड वेलबीइंग, 7*(9), 817-822.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2013, दिसंबर 12)। नेशनल रिपोर्ट ऑफ़ सेकंड नेशनल इवैल्यूएशन ऑफ़ केजीबीवी प्रोग्राम ऑफ़ GOI (नवंबर-दिसंबर 2013)। रिट्रीव्ड फ्रॉम डिपार्टमेंट ऑफ़ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी, गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया वेबसाइट: http://www.ssa.nic.in

This page is intentionally left blank